# संस्थान समाचार

## केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रो की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 12 ■ अंक : 80 ■ अप्रैल 2026



**इस अंक में**

वंदे मातरम् सामूहिक गीत कार्यक्रम

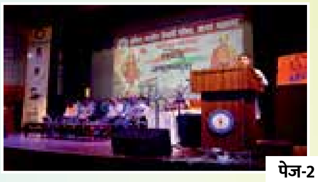

पेज-2

डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती

पेज-3

लोक साहित्य कार्यशाला आयोजित

पेज-5

हिंदी भाषा संवर्धनात्मक कार्यक्रम समारोह

पेज-6

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण

पेज-8


# "वसुधैव कुटुंबकम्" के संदेश से सजा सत्रांत समारोह

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा सत्र 2025–26 के लिए दिनांक 30-04-2026 को सत्रांत समारोह का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्रातः 11:00 बजे से अपराह्न 2:00 बजे तक आयोजित हुआ, जिसमें 20 देशों के 103 विद्यार्थियों, विद्वानों, राजनयिकों, शिक्षकों एवं प्रशासनिक कार्मिकों की गरिमामय उपस्थिति रही। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कार्यक्रम में अध्यक्षीय वक्तव्य के रूप में "अप्प दीपो भव" के माध्यम से हिंदी की ललक को बनाए रखने का संदेश दिया। मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप कुमार जोशी ने भारत की गुरु शिष्य परंपरा की महत्ता के साथ विदेशी विद्यार्थियों के अर्जित हिंदी ज्ञान को अपने-अपने देशों में प्रचारित करने पर जोर दिया। संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए हिंदी भाषा के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर चाड के प्रथम सचिव जिमितोला कोजिनान ने "वसुधैव कुटुंबकम्" के अर्थ को समझाया। इनके साथ ही मंचासीन अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेंद्र सिंह मीणा ने विभाग की उपलब्धियों और विदेशी विद्यार्थियों की प्रगति पर विस्तार से चर्चा की। प्रो. अपर्णा सारस्वत ने दिल्ली केंद्र पर अध्ययनरत विदेशी विद्यार्थियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मंचासीन अतिथियों के कर कमलों से सत्र 2025-26 के सफल विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं पदक वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने कुशलतापूर्वक किया।

इस कार्यक्रम में विभाग की विद्यार्थी केंद्रित पत्रिका हिंदी विश्व भारती का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह में चाड, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, श्रीलंका और जापान के विद्यार्थियों ने बहुत ही कुशलता से हिंदी में अपने विचार प्रस्तुत कर हिंदी भाषा के प्रति अपनी अभिरुचि और दक्षता का परिचय दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मंगोलिया से ओर्होन, दक्षिण अफ्रीका से सुष्मिता, गुयाना से दूधनाथ और श्रीलंका के विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियों से सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समारोह में दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत तथा केंद्र के सभी अध्यापक विद्यार्थियों सहित उपस्थित रहें। सत्रांत समारोह के इस शुभ अवसर पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की आगरा एवं दिल्ली केंद्र की छात्र पत्रिका 'हिंदी विश्व भारती 2025-26' का विमोचन किया गया। यह कार्य समारोह के विशिष्ट अतिथियों द्वारा सम्पन्न हुआ। तदुपरांत दोनों केंद्रों के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी और संस्थान में अपने अध्ययन के अनुभव को सबके साथ साझा किया। अंत में, इस अवसर पर समूचे सत्र में आयोजित विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा सभी के वार्षिक परीक्षाफल की घोषणा हुई और उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम की सफलता में संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों, शैक्षिक समन्वयक, कुलसचिव, पुस्तकालयाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग एवं दिल्ली केंद्र से आए शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। साथ ही अन्य विभागों के शिक्षकों, प्रशासनिक सदस्यों, सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, तथा सहयोगी कर्मचारियों ने आयोजन को सफल बनाने में सराहनीय भूमिका निभाई। अंत में डॉ. परमान सिंह द्वारा सभी अतिथियों, प्रतिभागियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

# वंदे मातरम् सामूहिक गीत कार्यक्रम

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा 'वंदे मातरम्' गीत कार्यक्रम के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में 'वंदे मातरम्'सामूहिक गीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री अनुज ठाकुर (ब्रज प्रान्त संगठन मंत्री, अ.भा.वि.प.), श्री रजत जोशी, श्री सागर राणा, श्री दीपक कश्यप तथा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के अन्य पदाधिकारीउपस्थितथें।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो.हरिशंकर (शैक्षिक समन्वयक) ने कार्यक्रम के संबंध में कहा कि 'वंदे मातरम्' गीत में जो भाव हैं, हमें उनका अनुशीलन करना चाहिए।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो. चंद्रकांत कोठे, (विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग) ने मुख्य अतिथि एवं समस्त ए.बी.वी.पी. के पदाधिकारियों का स्वागत एवं परिचय देकर संबोधित करते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय 'वंदे मातरम्' गीत के माध्यम से लोगों में ऊर्जा का संचार किया गया। आने वाली पीढ़ी को इस गीत के महत्व को समझकर आत्मसात करना आवश्यक है।

इस गीत में अंतर्निहित भावों को आत्मसात कर हम माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विजन विकसित भारत@2047 अभियान में योगदान दे सकते हैं। इस कार्यक्रम में अध्यापक शिक्षा विभाग के हिंदी शिक्षण पारंगत के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी मुहम्मद आरिफ (पश्चिम बंगाल) ने कहा कि 'वंदे मातरम्' एक गीत नहीं, वह एक मंत्र है जिसने भारत को आजादी दिलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

हिंदी शिक्षण प्रवीण (द्वितीय वर्ष) की शिक्षक प्रशिक्षणार्थी अथुई जेलियांग(नागालैंड) ने कहा कि इस गीत के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत एकता के सूत्र में बँधा हुआ है।

उद्बोधन एवं विचार अभिव्यक्ति के पश्चात सभागार में उपस्थित समस्त मंचासीन सदस्यों तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों, शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्यों, शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा अन्य विद्यार्थियों द्वारा 'वंदे मातरम्' गीत का सामूहिक गायन किया गया।

## एआई व्यवहारिक और प्रायोगिक कार्यशाला

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सांध्यकालीन पाठ्यक्रम विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. दीपामणि बरुवा द्वारा दिनांक 18 अप्रैल, 2026 को ऑनलाइन कार्यशाला शीर्षक : "AI व्यवहारिक और प्रायोगिक कार्यशाला" का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा किया गया। कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में डॉ. मानस प्रतिम गोस्वामी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, पूर्वोत्तर-पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय रहे। कार्यशाला में विभाग के विद्यार्थियों को साथ-साथ अध्यापक शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों ने भी सहभागिता किया। निदेशक महोदय ने AI Technology आज के प्रांसगिक एवं आवश्यक विषय की महत्तवता पर अपने विचार रखे। संस्थान के कुलसचिव डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर ने विषय के महत्व के बारे में बताया कि AI द्वारा सामग्री निर्माण, अनुसंधान, Assesment tools, आदि में सहायता ली जा सकती है।

कार्यशाला का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. तस्मीना हुसैन, सह-संयोजक द्वारा किया गया। कार्यशाला में 126 प्रतिभागी रहे और सभी को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

## 'उच्च शिक्षा में आईसीटी अनुप्रयोग' बहु-अनुशासनिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 23 फरवरी से 07 मार्च 2026 तक बहु-अनुशासनिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 'उच्च शिक्षा में आईसीटी अनुप्रयोग' का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देशभर से 111 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 23 फरवरी 2026 को आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम के वर्तमान अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अनिल डी. सहस्रबुद्धे उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. सहस्रबुद्धे ने कहा कि आज के डिजिटल युग में उच्च शिक्षा में आईसीटी का समावेश अनिवार्य हो गया है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), संवर्धित वास्तविकता (AR), आभासी वास्तविकता (VR) सहित अनेक अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध हैं, जिन्हें शिक्षकों को न केवल सीखना चाहिए, बल्कि अपने शिक्षण में प्रभावी रूप से उपयोग भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षकों का तकनीकी सशक्तिकरण ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि इन नवीन तकनीकों को केवल जानना

पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन्हें अपने जीवन और शिक्षण में व्यावहारिक रूप से अपनाना भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का यह दायित्व है कि वे स्वयं तकनीक में दक्ष होकर अपने विद्यार्थियों को भी इस दिशा में सक्षम बनाएँ। उन्होंने बताया कि इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य भी यही है कि शिक्षक आधुनिक तकनीकों से परिचित हों और उन्हें शिक्षा में समाहित करें। केंद्रीय हिंदी संस्थान सदैव शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

23 फरवरी से 07 मार्च तक ऑनलाइन पद्धति से प्रतिदिन चार व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें आईसीटी से संबंधित विविध विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा प्रायोगिक परिचर्चा के साथ मार्गदर्शन किया गया। साथ ही प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी रुचि के विषयों पर आलेख लिखे और परीक्षा भी दी।

कार्यक्रम का समापन 07 मार्च 2026 को हुआ, जिसमें के.सी.ई. सोसाइटी के प्रबंधन एवं अनुसंधान संस्थान, जलगाँव के पूर्व निदेशक प्रो. भाऊसाहेब व्यंकटराव पवार एवं डॉ. विकास कुमार पाठक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समापन सत्र में प्रो. भाऊसाहेब व्यंकटराव पवार ने कहा कि इस कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया गया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रतिभागी इस कार्यक्रम में अर्जित ज्ञान और कौशल को अपने-अपने संस्थानों में व्यवहार में लाएँगे तथा शिक्षण को और अधिक तकनीकी एवं प्रभावी बनाएँगे।

डॉ. विकास कुमार पाठक ने कहा कि भारत सरकार आज तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। अनुवादिनी जैसे AI-आधारित भारतीय उपकरणों का विकास इसी दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। उन्होंने कहा कि इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों ने जो तकनीकी उपकरण सीखे हैं, उनका उपयोग केवल स्वयं तक सीमित न रखकर अपने विद्यार्थियों तक भी पहुँचाना चाहिए, ताकि भारत का युवा वर्ग तकनीकी दृष्टि से और अधिक सक्षम बन सके।

# डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती

14 अप्रैल, 2026 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह का आयोजन अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में किया गया।

प्रो. चंद्रकांत कोठे (विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा) ने स्वागत वक्तव्य तथा संस्थान का परिचय देकर संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के योगदान को स्मरण करने का दिन है उन्होंने समाज में भेदभाव मिटाने, बंधुत्व स्थापित करने, सामूहिकता एवं सद्भाव बढ़ाने पर बल दिया।

कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान करते हुए प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि अंबेडकर जी जाति बंधनों से मुक्त हैं उन्होंने पूरे देश को करुणा और प्रेम का संदेश दिया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुरेश शेळके, हिंदी विभाग, नागनाथ कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, औंढा नागनाथ (महाराष्ट्र) ने उद्बोधन में कहा कि अंबेडकर जी की जयंती उनके जीवित रहते मनाई गई थी, यह वर्ल्ड रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि उनके नाम का अभिवादन "जय भीम" उनकी व्यापकता और महानता को दर्शाता है। प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में "हो गए बहुत, होंगे बहुत, लेकिन उनके जैसा कोई नहीं" के माध्यम से कहा कि अंबेडकर के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम हैं।

जिसने जिस रूप में उन्हें देखा, उसे वैसा ही दिखाई दिया। आज उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को पढ़ने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न भीम गीतों को भी प्रस्तुत किया गया।

# हिंदी शिक्षण : बदलते परिप्रेक्ष्य, उभरती संभावनाएँ

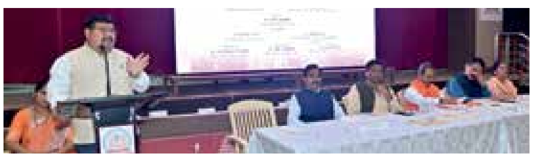

आर.जी.बगडिया आर्ट्स, एस.बी. लखोटिया कामर्स ॲन्ड आर. बेझंजी सायन्स कॉलेज जालना के हिंदी विभाग और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 6 अप्रैल 2026 को "हिंदी शिक्षण : बदलते परिप्रेक्ष्य, उभरती संभावनाएँ" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, महाराष्ट्र प्रांत के अध्यक्ष माननीय श्री प्रदीप खेडकर ने कहा कि बदलते समय के अनुसार विश्वविद्यालयों को अपने पाठ्यक्रमों का पुनर्गठन करना आवश्यक है तथा नई शिक्षा नीति के अनुरूप कौशल-आधारित पाठ्यक्रमों को प्राथमिकता देना समय की माँग है।

बीज वक्ता के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक डॉ. सुनील कुळकर्णी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अब शिक्षा से जुड़े सभी घटकों को पारंपरिक साधनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। विकसित हो रही तकनीक से भयभीत होने के बजाय उसका सकारात्मक उपयोग कर शिक्षा को अधिक सरल, प्रभावी और समाजोपयोगी बनाने की दिशा में प्रयास करने चाहिए।

इस अवसर पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय की प्रबंधन परिषद की सदस्या डॉ. अपर्णा पाटील,

शेष पृष्ठ 7 पर

## संपादकीय

# अंतः अस्ति आरंभ

प्रिय पाठकों,

मनुष्य का जीवन निरंतर परिवर्तन और नवसृजन की प्रक्रिया है। हर अंत अपने भीतर किसी नए आरंभ का संकेत छिपाए रहता है। प्रकृति का नियम भी यही है कि जहाँ एक ओर पतझड़ वृक्षों को सूना कर देता है वहीं दूसरी ओर वही पतझड़ वसंत के आगमन की भूमिका भी तैयार करता है। इस माह सत्र 2025-26 के छात्रों का सत्रांत समारोह भी इसी आकांक्षा की सृष्टि करता है कि प्रत्येक समाप्ति के भीतर किसी नई संभावना, नए सृजन और नए जीवन का बीज निहित होता है।

मानव जीवन में सुख-दुःख, सफलता असफलता, मिलन-विरह और निर्माण-विनाश का क्रम अनवरत चलता रहता है। जब कोई परिस्थिति समाप्त होती है तब मनुष्य प्रायः निराशा और शून्यता का अनुभव करता है किंतु यदि वह गहराई से विचार करे तो पाएगा कि वही समाप्ति किसी नए मार्ग का उद्घाटन भी करती है। विद्यार्थी का विद्यालय जीवन समाप्त होता है तो उसके समक्ष भविष्य के नए अवसर खुलते हैं। एक नौकरी का अंत किसी बेहतर कार्य की शुरुआत बन सकता है। इसी प्रकार जीवन में आने वाले संघर्ष भी व्यक्ति को अधिक परिपक्व और मजबूत बनाते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में 'अंतः अस्ति आरंभ' की भावना अत्यंत गहराई से विद्यमान है। हमारे उपनिषद, गीता और पुराण सभी इस सत्य की ओर संकेत करते हैं कि संसार परिवर्तनशील है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म भी निश्चित है। यहाँ मृत्यु को अंत नहीं माना गया बल्कि एक नई यात्रा का आरंभ समझा गया है। भारतीय दर्शन में जीवन को चक्र के रूप में देखा गया है जहाँ अंत और आरंभ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्रकृति इस सत्य की सबसे बड़ी शिक्षिका है। सूर्य प्रतिदिन अस्त होता है किंतु उसका अस्त होना अगले दिन के सूर्योदय का संकेत भी है। ऋतुओं का परिवर्तन भी यही संदेश देता है। वर्षा के बाद शरद आती है शरद के बाद शीत और फिर वसंत। यदि वृक्ष पुराने पत्तों को न छोड़ें तो नए पत्तों का जन्म संभव नहीं होगा। नदी जब अपने पुराने मार्ग को छोड़ती है तभी वह नए क्षेत्रों को जीवन प्रदान कर पाती है।

इतिहास साक्षी है कि बड़े-बड़े साम्राज्यों का पतन हुआ किंतु उसी पतन ने नए युग और नई सभ्यताओं को जन्म दिया। भारत की स्वतंत्रता का संघर्ष भी अनेक बलिदानों और पीड़ाओं के अंत से होकर गुजरा। अंग्रेजी शासन का अंत स्वतंत्र भारत के निर्माण का आरंभ बना। इसी प्रकार विश्व इतिहास में अनेक युद्धों और संकटों ने मानवता को नई चेतना प्रदान की। वर्तमान समय में जब विश्व युद्ध, हिंसा और वैचारिक संघर्षों से जूझ रहा है तब भी यह विश्वास बना हुआ है कि शांति और सौहार्द का नया युग अवश्य आएगा।

व्यक्तिगत जीवन में भी असफलताएँ किसी अंत का प्रतीक प्रतीत होती हैं किंतु वही व्यक्ति को नई दिशा देती हैं। महापुरुषों के जीवन में अनेक बार असफलताओं ने ही उन्हें महान बनाया। यदि अब्राहम लिंकन चुनावों में बार-बार असफल न होते तो संभवतः वे इतने दृढ़ न बन पाते। यदि महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में अपमान का अनुभव न करते तो भारत को सत्य और अहिंसा का वह महान नेता शायद न मिलता।

साहित्य में भी यह अवधारणा अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है। हिंदी साहित्य के कवियों और लेखकों ने जीवन की निराशा में भी आशा का स्वर खोजा है। जयशंकर प्रसाद ने लिखा-

'अरुण यह मधुमय देश हमारा।'

यह पंक्ति अंधकार के बाद आने वाले प्रकाश की अनुभूति कराती है। महादेवी वर्मा के काव्य में विरह और पीड़ा के बीच भी नवजीवन की आकांक्षा दिखाई देती है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने संघर्षों के बीच भी मानवता और आशा का संदेश दिया। साहित्य मनुष्य को यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ हर अंधकार के बाद उजाला अवश्य होता है।

आधुनिक युग में तकनीकी और सामाजिक परिवर्तन भी इसी सत्य को प्रमाणित करते हैं। आज डिजिटल तकनीक ने पारंपरिक जीवन शैली को बदल दिया है। कई पुरानी व्यवस्थाएँ समाप्त हुईं किंतु उसी समाप्ति ने नए अवसरों को जन्म दिया। ऑनलाइन शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल संचार ने जीवन को नई दिशा दी है। कोरोना महामारी के समय पूरी दुनिया ने भय और अनिश्चितता का अनुभव किया। अनेक लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया, आर्थिक संकट झेले और सामाजिक दूरी का सामना किया किंतु उसी कठिन समय ने मानवता को सहयोग, विज्ञान और नवाचार का महत्व भी सिखाया।

अथ, 'अंतः अस्ति आरंभ' जीवन, प्रकृति, समाज और आध्यात्मिकता का सार्वभौमिक सिद्धांत है। यह हमें निराशा में आशा, अंधकार में प्रकाश और समाप्ति में सृजन देखने की प्रेरणा देता है। यदि मनुष्य इस सत्य को समझ ले तो वह जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित और सकारात्मक बना रह सकता है। हर अंत किसी नए आरंभ की भूमिका है और यही जीवन की सबसे सुंदर विशेषता है। इसलिए हमें प्रत्येक समाप्ति को भय की दृष्टि से नहीं बल्कि नए अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहिए। वर्ष 2025-26 के सभी विद्यार्थियों को शुभाशीष..

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
'देशगव्हाणकर'
निदेशक

# 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में भारतीय भाषाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) साधित शिक्षण तकनीकें' विषय पर कार्यशाला आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के परियोजना विभाग द्वारा 20-23 अप्रैल, 2026 तक आयोजित "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के आलोक में भारतीय भाषाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) साधित शिक्षण तकनीकें" विषय पर चार दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन सत्र दिनांक 20 अप्रैल, 2026 को माननीय निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। यह कार्यशाला- "भारतीय दृष्टिकोण से पाश्चायत्य अधिगम सिद्धांकतों एवं शिक्षाशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धांतों पर चिंतन एवं विमर्श" विषयक परियोजना के अंतर्गत पहली कार्यशाला है।

उद्घाटन सत्र में परियोजना विभाग के अध्यक्ष प्रो. धनजी प्रसाद ने सभी अतिथि विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा से आवश्यक तत्त्वों का समावेश करते हुए तकनीकी और एआई के अनुप्रयोग की संभावनाओं की खोज करना है। कार्यशाला में प्रो. गिरीश नाथ झा, प्रो. अतुल मायागिरी गोसाईं, डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रो. बी.पी. सिंह, डॉ. गायत्री कपिल, डॉ. कामेश्वर सिंह, डॉ. राजेंद्र वर्मा, डॉ. स्नेहलता, डॉ हर्षलता पेटकर, डॉ. सी. जयशंकर बाबु, डॉ. अभिषेक कुमार सिंह, डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर तथा प्रो. शिल्पी कुमारी सहित अनेक विद्वायन सहभागी रहे।

निदेशक महोदय ने उद्घाटन सत्र में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि एआई के वर्तमान युग में शिक्षाशास्त्रीय एवं भाषावैज्ञानिक विषयों को भारतीय दृष्टिकोण से पुनर्संगठित करने की आवश्यकता है। यह कार्यशाला वर्तमान डिजिटल प्रौद्योगिकी और एआई के भारतीय भाषाओं को शिक्षण में अनुप्रयोग तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश पर विचार विमर्श एवं सामग्री निर्माण के मार्ग प्रशस्त करेगी। उन्होंने कार्यशाला से ठोस परिणाम, जैसे- पाठ्यक्रम, मॉड्यूल एवं शैक्षिक सामग्री आदि विकसित करने पर बल दिया।

कार्यशाला में विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर एआई आधारित शिक्षण, विषयानुसार एआई अनुप्रयोग, साइबर सुरक्षा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समन्वय जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने विचार व्यक्त किए। प्रतिभागियों ने स्वदेशी एआई, बहुभाषिक सॉफ्टवेयर, डेटा विश्लेषण एवं भाषा अधिगम में एआई की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला में हुए सम्यक विचार-विमर्श के आधार पर सभी विद्वांनों ने एक माह के भीतर सामग्री निर्माण का कार्य कर प्रेषित करने पर सहमति व्यक्त की, जिसे पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया जाएगा। यह कार्य भारतीय भाषाओं में एआई आधारित शिक्षण एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश को नई दिशा देने का कार्य करेगा।

# सिंधी भाषा दिवस के उपलक्ष्य में चर्चा-परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन

13 अप्रैल, 2026 केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी के समिति कक्ष (आगरा) एवं प्रांगण में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा (शिक्षा मंत्रालय), भारत सरकार राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकासपरिषद एवं सिंधी सेंट्रल पंचायत (आगरा) के संयुक्त तत्वावधान में ''सिंधी भाषा दिवस" के उपलक्ष्य में चर्चा-परिचर्चा एवं भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हर साल 10 अप्रैल को 'सिंधी भाषा दिवस' मनाया जाता है, जो सिंधी समुदाय की समृद्ध विरासत, संस्कृति और साहित्य को सम्मानित करने का एक विशेष दिन है। यह अवसर 10 अप्रैल, 1967 को सिंधी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की ऐतिहासिक उपलब्धि की याद दिलाता है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में आयोजित कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु उत्तर प्रदेश के माननीय शिक्षा मंत्री श्री योगेंद्र उपाध्याय एवं आगरा उत्तर निर्वाचन क्षेत्र के माननीय विधायक श्री पुरुषोत्तम खंडेलवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम दो सत्रों में विभाजित रहा, प्रथम सत्र में सिंधी भाषा के विशेषज्ञों द्वारा 'भारतीय साहित्य में सिंधी भाषा का योगदान' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सिंधी भाषा, साहित्य और इस समुदाय के राष्ट्र निर्माण में योगदान पर गहन विमर्श किया गया। कार्यक्रम में विद्वानों ने सिंधी समाज के आर्थिक प्रभाव से लेकर विभाजन की साहित्यिक पीड़ा तक विभिन्न पहलुओं को साझा किया।

इस पैनल चर्चा में सिंधी चिंतकों डॉ. प्रीति जगवानी(एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय), कुसुम लता बकरू (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या), पूजा कल्याणी (लोक गायिका और कलाकार), राम चंद्र छाबड़िया (लेखक) एवं प्रो. धनजी प्रसाद (केंद्रीय हिंदी संस्थान) द्वारा चर्चा-परिचर्चा की गई। इस चर्चा के आरंभ में राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (NCPSL) एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने संबोधन में एक महत्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए बताया कि सिंधी समुदाय जनसंख्या में कम होने के बावजूद देश की कुल जीडीपी (GDP) में लगभग 12% का योगदान दे रहा है। तत्पश्चात कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिष्ठित पैनल विशेषज्ञों ने भी सिंधी भाषा के विभिन्न आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रोफेसर धनजी प्रसाद और रामचंद्र छाबड़िया ने भारतीय साहित्य के व्यापक फलक पर सिंधी भाषा की स्थिति को स्पष्ट किया, वहीं कुसुम लता बकरू, कविता ईसरानी और पूजा कल्याणी ने भी इसके संरक्षण और आधुनिक स्वरूप पर अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में उत्तर प्रदेश के माननीय शिक्षा मंत्री श्री योगेंद्र उपाध्याय जी तथा आगरा, उत्तर निर्वाचन क्षेत्र के माननीय विधायक श्री पुरुषोत्तम खंडेलवाल जी सम्मानीय मुख्य अतिथि के रूप में जुड़े। कार्यक्रम का शुभारंभ सोमनाथ धाम के मठाधीश पीर डॉ. शंकरनाथ योगी, सभी मुख्य अतिथियों एवं संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा माँ सरस्वती और झूलेलाल जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलनके साथ किया गया। आदरणीय मठाधीश पीर डॉ. शंकरनाथ योगीने सिंधी समाज की एकता एवं सांस्कृतिक विरासत को सहजने पर बल दिया।इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (NCPSL) के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने स्वागत भाषण दिया। आदरणीय मुख्य अतिथियों के शुभ करकमलों से राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (NCPSL) द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में कुल 10 प्रतिभागियों- रिया वलेचा, भारती अस्वनी, वंश थवानी, जयवंती दिनेश छाबड़िया, प्रीटी नागपाल, डॉ. चंदर प्रकाश ददलानी, डॉ. मीना वाधवानी, डॉ. संध्या चंदर कुन्दनानी, ख़ुशी प्रदीप भगवानी एवं अरुणा तहलियानी तथा सेंट्रल सिंधी पंचायत द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कुल ढाई सौ (250) प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित मुख्य अतिथियों, वक्ताओं, श्रोताओं व राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (NCPSL) एवं सिंधी सेंट्रल पंचायत के पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम का समापन एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ। सांस्कृतिक सत्र में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के विभिन्न देशों- उज़्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान, मंगोलिया, ताजिकिस्तान, ईरान, श्रीलंका, आदि से आए विदेशी छात्रों ने अपने-अपने देश का पारंपरिक नृत्य एवं संगीत प्रस्तुत किया वहीं भारत के अलग-अलग राज्यों- असम, नागालैंड, ओडिसा, महाराष्ट्र आदि से आए विद्यार्थियों द्वारा लोकनृत्य, शास्त्रीय नृत्य और अन्य रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं। अंत में राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

# लोक साहित्य कार्यशाला आयोजित

कन्नड़-हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश निर्माण संशोधन संबंधी प्रथम कार्यशाला दिनांक 06.04.2026 से 10.04.2026 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (मुख्यालय) में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, संपादक, हिंदी विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, प्रो. संदीप रणधीरकर, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभागाध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, कर्नाटक डॉ. श्रीधर हेंगड़े, हिंदी विभाग, फील्ड मार्शल, के. एम करियप्पा कॉलेज, मेगलूर विश्वविद्यालय, मदिकेरी, कोडागु, कर्नाटक ने भाग लिया।

ओड़िआ लोक साहिय निर्माण संबंधी तृतीय कार्यशाला दिनांक 27.04.2026 से 29.04.2026 तक केंद्रीय हिंदी सस्थान, भुवनेश्वर केंद्र में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई है। इस कार्यशाला में डॉ. लक्ष्मीधर दास (ओड़िया भाषा संपादक), डॉ. गोविंद चन्द्र पेठोई, वरिष्ठ गवेषक, शास्त्रीय ओड़िया भाषा अध्ययन केंद्र, भुवनेश्वर, ने भाग लिया।

शिलांग केंद्र

# 193वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग द्वारा मेघालय राज्य के पश्चिम खासी हिल्स तथा पूर्वी पश्चिम खासी हिल्स जिले के हिंदी शिक्षकों के लिए 193वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम 20 अप्रैल से 2 मई, 2026 तक S.D.S.E.O कार्यालय मैरांग में आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम के कुल 22 प्रतिभागी शिक्षकों (13 पुरुष एवं 09 स्त्री) ने सहभागिता की।

इस पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह का आयोजन केंद्रीय हिंदी संस्थान के शिलांग परिसर में किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार चौबे, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र ने की। कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार चौबे का स्वागत-सम्मान संस्थान के अंगवस्त्र एवं पुष्प गुच्छ से किया। मुख्य अतिथि प्रो. दिनेश कुमार चौबे ने अपने उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान के शिलांग केंद्र द्वारा हिंदी के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा हिंदी शिक्षण के अपने अनुभव को प्रतिभागी शिक्षकों से साझा किया।

उन्होंने कहा कि भाषा व्यक्तित्व का निर्माण करती है। यह एक अर्जित संपत्ति है जो लगातार अभ्यास से आती है। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करने हेतु रचनात्मक एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें।

साथ ही, उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भाषा शिक्षण केवल व्याकरण तक सीमित न रहकर व्यवहारिक जीवन से जुड़ा होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी भाषा का सहज और प्रभावी उपयोग कर सकें। उन्होंने शिक्षकों को निरंतर आत्म-अध्ययन, नवीन तकनीकों के प्रयोग तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्ध रहने की प्रेरणा दी।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने सभी प्रतिभागी शिक्षकों से आह्वान किया कि वे हिंदी भाषा के प्रसार और संवर्धन के लिए समर्पित भाव से कार्य करें। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज में भाषा और संस्कृति के वाहक भी होते हैं।

उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, संवादात्मक और छात्र-केंद्रित बनाया जाए, ताकि विद्यार्थी न केवल भाषा को सीखें, बल्कि उसे आत्मसात भी कर सकें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान और अनुभव को शिक्षक अपने-अपने कार्यक्षेत्र में प्रयोग करेंगे तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

इस कार्यक्रम का संचालन अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन अतिथि अध्यापिका सुश्री लख्मी रानी बोरा ने किया। नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन 02 मई, 2026 को S.D.S.E.O कार्यालय, मैरांग में हुआ।

## नवनिर्मित जलपान-गृह का उद्घाटन

संस्थान में आज दिनांक 30 अप्रैल, 2026 को एक विशेष गरिमामयी समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के नवनिर्मित 'जलपान-गृह' (कैंटीन) का भव्य लोकार्पण प्रो. प्रदीप कुमार जोशी (अध्यक्ष, राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (NTA) एवं पूर्व अध्यक्ष, संघ लोक सेवा आयोग) के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे एवं निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी उपस्थित रहे।

## केंद्रीय पुस्तकालय का संदर्शन

प्रो. प्रदीप कुमार जोशी (अध्यक्ष, राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (NTA) एवं पूर्व अध्यक्ष, संघ लोक सेवा आयोग) ने संस्थान के केंद्रीय पुस्तकालय का संदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने पुस्तकालय के 'ज्ञानकोश' (डिजिटल रिपॉजिटरी) का सूक्ष्मता से अवलोकन किया और 'इण्डकैट' (IndCat) के माध्यम से पुस्तकों की ऑनलाइन उपलब्धता एवं स्थिति की जानकारी ली एवं पुस्तकालय के इ-एक्सेस कक्ष का भी अवलोकन किया।

प्रो. प्रदीप कुमार जोशी एवं प्रो. सुरेंद्र दुबे ने 'केंद्रीय हिंदी संस्थान ज्ञानकोश' की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए इसे शिक्षा और शोध के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह पहल विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए अत्यंत मददगार साबित होगी। इस अवसर पर संस्थान के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

## पाठ्य पुस्तक निर्माण कार्यशाला

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा संचालित पाठय पुस्तक निर्माण कार्य के अंतर्गत लिखित अभिव्यक्ति एव अभ्यास पुस्तिका (कक्षा-100) पाठ्य पुस्तक के निर्माण के संबंध में दिनांक 09-10 अप्रैल, 2026 को दो दिवसीय कार्यशाला सांध्यकालीन विभाग मे आयोजित की गई। इस कार्यशाला के विषय विशेषज्ञ प्रो. धनजी प्रसाद और डॉ. अरविंद रावत सदस्य के रूप में प्रतिभागी रहे। इस दो दिवसीय कार्यशाला की संयोजिका डॉ.. दीपामणि वरूवा रहीं।

# हिंदी भाषा संवर्धनात्मक कार्यक्रम समारोह

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, कॉलेज ऑफ प्रचारक विद्यालय, (बी.एड.), खैरताबाद, हैदराबाद के बी.एड्.प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्रों के प्रशिक्षण के लिए दि. 02.04.2026 से दि. 14.04.2026 तक प्रथम 'हिंदी भाषा संवर्धनात्मक कार्यक्रम आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन दिनांक 02.04.2026 को किया गया। यह कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री एम. राधाकृष्ण, सचिव (प्रभारी), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद के रूप में एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, शिक्षा महाविद्यालय, बीएड, खैरताबाद, हैदराबाद के प्राचार्य डॉ. के. चारूलता उपस्थित थीं। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. एस. राधा उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम में कुल 55 (महिला-43, पुरुष-12) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस शिविर का समापन दिनांक 14.04.2026 को किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान की पीजी. विभागाध्यक्ष (प्रभारी) डॉ. साहिराबानो बी. बोरगल, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एम. राधाकृष्ण, सचिव (प्रभारी), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, शिक्षा महाविद्यालय, बीएड, खैरताबाद, हैदराबाद के प्राचार्य डॉ. के. चारूलता उपस्थित थीं। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. फत्ताराम नायक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ. भास्कर कृष्णाजी ठुबे, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. राजीव कुमार सिंह एवं डॉ. सी. कामेश्वरी उपस्थित रहीं।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि हिंदी की सेवा में रत दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा अपने बी.एड्. प्रशिक्षणार्थियों के माध्यम से हिंदी की सेवा कर रही है। इस प्रशिक्षण में केंद्रीय हिंदी संस्थान के अध्यापकों द्वारा उनके इस कार्य में सहयोग देने हेतु इस तरह के प्रशिक्षण हर वर्ष किए जाते हैं। जिससे नई शिक्षा नीति में सरकार की मंशा अनुसार जो भी विषय दिए गए हैं, उनका अभ्यास इन प्रशिक्षणार्थियों को अध्यापक बनने से पहले ही प्राप्त हो चुका है। यह अच्छे अध्यापक बनेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

मुख्य अतिथि डॉ. साहिराबानो बी. बोरगल ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। जब यह शिक्षक बनेंगे तो अपने विद्यार्थियों की कमियों को कैसे सुधारा जाए उसका ज्ञान इनको पहले ही प्राप्त हो चुका होगा। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान दोनों ही हिंदी सेवा में रत संस्थाएँ हैं जो हिंदी के उत्थान के लिए भविष्य में भी साथ में कार्य करेंगी।

पाठ्यक्रम संयोजक एवं क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि देश का भविष्य अध्यापक के हाथों में होता है। अगर एक डॉक्टर खराब निकल जाए तो कुछ मरीज ही मरते हैं। एक इंजीनियर खराब निकले तो कुछ भवनों का ही नुकसान होगा। किंतु एक शिक्षक खराब निकल जाए तो बहुत सारी पीढ़ियाँ खराब हो जाती हैं। इसलिए अध्यापक का आचरण एवं व्यवहार समाज के लिए अनुकरणीय होता है।

इस कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका ''उत्कल उत्कर्ष'' की रचना की। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया। प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। प्रितिश प्रियदर्शन साहु को प्रथम पुरस्कार, सुचिस्मिता सेठी को द्वितीय पुरस्कार, बिनोदिनी दास को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। स्वातिलिप्सा नायक को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस पाठ्यक्रम के समापन समारोह में प्रतिभागियों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रतिभागियों द्वारा सामूहिक नृत्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संस्थान परिवार का भरपूर सहयोग रहा। अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

# 495वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा आंध्र प्रदेश राज्य के अनंतपुर जिले के हिंदी प्रचारकों के प्रशिक्षण के लिए दि. 25.04.2026 से दि. 08.05.2026 तक 495वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 25.04.2026 को किया गया।

यह कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री गैबुवली संस्थापक प्रधान सचिव, हिंदी सेवा सदन, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश, विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय सलाहकार हिंदी सेवा सदन महाविद्यालय, अनंतपुर एवं जेडपी हाईस्कूल गोला के हेडमास्टर श्री एमएमडी अजमतुल्ला उपस्थित थे।

इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. भास्कर कृष्णाजी ठुबे, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. सी. कामेश्वरी एवं श्री सजग तिवारी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में कुल 60 (महिला-50, पुरुष-10) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने हिंदी सेवा सदन गैबुवली को अनंतपुर जिले के गैर-हिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी प्रचारकों और शिक्षकों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा आयोजित हिंदी प्रशिक्षण कक्षाओं में सहायता प्रदान करने के लिए बधाई दी और प्रशिक्षुओं से इन हिंदी प्रशिक्षण कक्षाओं का सदुपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने प्रशिक्षण कक्षाओं में भाग लेने वाले उम्मीदवारों को भी बधाई दी।

मुख्य अतिथि एस. गइबुवली ने कहा कि यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि देश में हिंदी के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित संस्था केंद्रीय हिंदी संस्थान, गैर-हिंदी भाषी क्षेत्र अनंतपुर के हिंदी सेवा सदन में हिंदी प्रशिक्षण कक्षाएँ आयोजित कर रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी प्रचारकों और शिक्षकों को इस अवसर का लाभ उठाकर हिंदी में अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिए।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. भास्कर कृष्णाजी ठुबे ने अपने द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं और अवसरों का सदुपयोग किया जाना चाहिए। इस अवसर पर अतिथियों का अभिनंदन किया गया।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी संस्थान के अतिथि प्रवक्ता डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. कामेश्वरी, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सजग तिवारी, हिंदी सेवा सदन के संयोजक इम्तियाज, हिंदी प्रचारक, हिंदी शिक्षक, संकाय सदस्य, केंद्र के संस्थापक और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 08.05.2026 को संपन्न किया जाएगा।

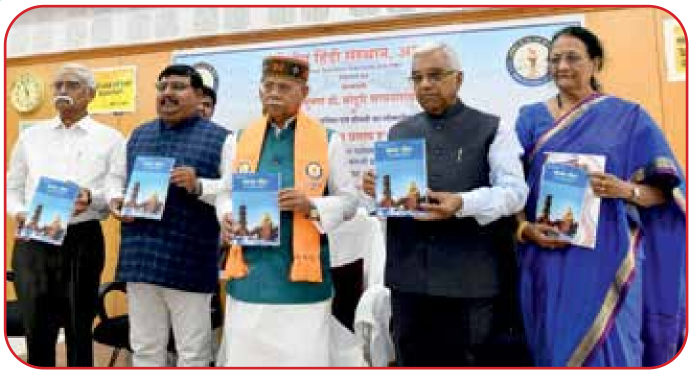

महामहिम राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल जी ने संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका 'समन्वय दक्षिणी' का विमोचन किया।

भारत के राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के सृजन के 150 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मुख्यालय आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में आयोजन किया गया।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा हिंदी विश्व भारती पत्रिका का विमोचन किया गया।

अध्यापक शिक्षा विभाग एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह का आयोजन अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में किया गया।

पृष्ठ 3 का शेष

एम.एस.पी. कॉलेज, मानोरा के प्राचार्य डॉ. नंदकुमार ठाकरे भी उपस्थित थे।

उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. गणेश अग्निहोत्री ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि शिक्षा में नवाचार, तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समन्वय समय की आवश्यकता है तथा शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को बदलते परिप्रेक्ष्य के अनुरूप स्वयं को तैयार करना होगा।

हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नानासाहेब गोरे ने विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न शैक्षणिक एवं शोधपरक गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुजाता रगड़े ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन प्रा. किशोर खरात ने किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में "अध्ययन-अध्यापन में तकनीकी कौशलों का उपयोग" विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. आनंद पाटील ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके साथ ही केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के प्रो. धनजी प्रसाद "अनुसंधान के परिवर्तित क्षेत्र और कृत्रिम मेधा का उपयोग" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुरेश मुंढे द्वारा की गई तथा डॉ. शिवाजी सांगोळे की प्रमुख उपस्थिति रही। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में प्राध्यापकों, शोध मार्गदर्शकों एवं शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों का वाचन किया गया।

संगोष्ठी का समापन समारोह जालना एज्युकेशन सोसायटी के उपाध्यक्ष माननीय फुलचंद जी भक्कड़ की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के माननीय उपेंद्र भाऊ कुळकर्णी तथा अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर के प्रांत महामंत्री एवं अध्यक्ष डॉ. दिलीप अर्जुने भी उपस्थित रहे। संपूर्ण कार्यक्रम में भारी संख्या में विद्यार्थी एवं अध्यापकगण उपस्थित रहे।

## प्रकाशन विभाग

संस्थान में प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

**नोट:** 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

**Merchant Name :**
**THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL**
**UPI ID : thekhsmagra@sbi**

शब्दवार्ता

## "सौहार्द"

'सौहार्द' एक भाववाचक संज्ञा तथा नपुंसकलिंग शब्द है, जिसकी व्युत्पत्ति 'सु + हृद' से मानी जाती है। 'हिंदी शब्दसागर' (पृ.-5330) के अनुसार सौहार्द का अर्थ इस प्रकार है -संज्ञा पुं० [सं०] 1. सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री । सख्य । दोस्ती। 2. सुहृद या मित्र का पुत्र । 3. मन की ऋजुता हृदय की सरलता 4. सद्भाव। यह केवल एक भाषिक अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि मानवीय संबंधों की संवेदनशील शक्ति है जो समाज को एक सूत्र में बाँधने की परिचायक है। अंग्रेजी में इसे हार्मनी (Harmony) कहा जाता है। सौहार्द की भावना सामाजिक जीवन में प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता और समन्वय को विकसित करती है। जिससे शांति, समरसता और मानवता का वातावरण निर्मित होता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जब विश्व युद्ध, आतंकवाद, वैचारिक संघर्ष और राजनीतिक तनावों से प्रभावित हो रहा है तब सौहार्द का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। आज अनेक देशों के बीच चल रहे युद्ध संघर्षों से हिंसा, घृणा और स्वार्थ की प्रवृत्तियाँ विश्व-शांति को चुनौती दे रही हैं। ऐसे में भारतीय सांस्कृतिक मूल्य "वसुधैव कुटुम्बकम्" सौहार्द की भावना का ही व्यापक समर्थन करती है।

- डॉ. शिवानी चौहान

# “पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण”

तेलंगाना राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ल ने पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण की प्रतिमा का किया अनावरण।

दिनांक 08.04.2026 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संस्थापक पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी की आवक्ष प्रतिमा एवं उनकी जीवनी का लोकार्पण केंद्रीय हिंदी संस्थान, बापूजी नगर, बोवेनपल्ली, सिकंदराबाद में माननीय श्री राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल जी के करकमलों द्वारा किया गया। उन्होंने पद्म भूषण डॉ. मोटूरी सत्यनारायण को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक दूरदर्शी स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक के रूप में याद किया।

इस अवसर पर उनकी जीवनी तथा संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका ‘समन्वय दक्षिण’ का भी विमोचन किया गया। अपने संबोधन में श्री शुक्ल ने कहा कि तेलुगु भाषी होते हुए भी डॉ. सत्यनारायण ने हिंदी को राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाया और इसके प्रचार-प्रसार के लिए उत्तर भारत तक गए। उन्होंने आगरा में केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी के प्रचार और राष्ट्रीय चेतना जगाने के कारण डॉ. सत्यनारायण को कारावास भी झेलना पड़ा, लेकिन उनका संकल्प अडिग रहा। राज्यपाल ने कहा कि संविधान सभा में डॉ. सत्यनारायण ने भारतीय भाषाओं के विकास और हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने में अहम योगदान दिया। साथ ही उन्होंने केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल की स्थापना कर अपने विचारों को आगे बढ़ाया। उन्होंने यह भी कहा कि डॉ. सत्यनारायण ने कभी हिंदी को थोपने का प्रयास नहीं किया, बल्कि इसे संवाद और समन्वय की भाषा के रूप में बढ़ावा दिया। उनका जीवन राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय और भाषाई सौहार्द का प्रेरणास्रोत है।

इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, डॉ. मोटूरि सत्यनारायण की पुत्री सुजाता कुमार, शासी परिषद के सदस्य प्रो. आर.एस. सर्राजू, शासी परिषद के सदस्य प्रो. जोगेंद्र सिंह बिसेन, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. भास्कर ठुबे, डॉ. एस. राधा, डॉ. दीपेश व्यास, सेवानिवृत्त पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, प्रो. गंगाधर वानोडे, प्रो. वाई. शकुंतलम्मा रेड्डी, डॉ. अनीता गांगुली, डॉ. माणिक्यांबा मणि, आकाशवाणी कार्यक्रम प्रभारी सौमा कुमारी, प्रो. वी. रामकोटी, श्रीमती जानकी, डॉ. के. चारुलता, प्रो. श्यामराव, प्रो. भगवान गव्हाडे, डॉ. राजश्री, डॉ. आत्माराम, डॉ. राजेंदर, डॉ. अपर्णा मोरे, डॉ. प्रकाश कोपर्डे, डॉ. जे. मिश्रा, डॉ. कामेश्वरी, डॉ. राजीव सिंह, डॉ. संदीप कुमार, श्री शेख मस्तान वली, श्री सजग तिवारी, डॉ. श्यामसुंदर मूंदड़ा, डॉ. प्रदीप दत्त, डॉ. साकेत सहाय, देवकांत पवार, डॉ. श्रुतिकांत भारती, राज्यपाल सचिवालय के अधिकारी तथा अन्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फताराम नायक ने किया। समापन डॉ. भास्कर दूबे के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।


संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
प्रो. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहायक
डॉ. शिवानी चौहान

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।
संस्थान समाचार का ई-मेलः
sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।